प्रातः क्लास 24-3-68 ओमशान्ति पिताशी शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। परमपिता शिव भगवानुवाचः इनका अर्थ भी झट बुधि में आ जाना चाहिए। परमपिता परमा० प्रेरणा वगैरह आद कुछ नहीं देते हैं। न परमपिता परमात्मा कोई के तन में प्रवेश करते हैं सिवाय एक के। इसके लिए ही कहा जाता है दिव्य अलौकिक जन्म। और कोई मनुष्य के तन में मैं नहीं जाता हूं। ब्र जो भी जीवात्मायें हैं उनको बाप तो याद पड़ती ही है। कहते हैं हे परमपिता आकर कर के पावन बनाओ। यह भी समझते होनई दुनिया है पावन, पुरानी दुनिय है पतित। पावन दुनिया में एक भी पतित हो न सके। पतित दुनिया में फिर एक भी पावन हो न सके। जो भी सन्यासी ऋषि-मुनि आद हैं-यह सभी हैं भक्ति-मार्ग के। पवित्रता का मान तो है ही। वह कोई जन्म-जन्मान्तर के पवित्र नहीं हैं। वह तो एक ही जन्म के लिए पवित्र बनते हैं। बाप बनाते हैं जन्म-जन्मान्तर अर्थात 21 जन्म आधा कल्प लिए। है तो वह भी मनुष्य। उन्हीं को देवता कहा जाता है। इस समय है मनुष्य इनमें दैवीगुण नहीं हैं। इसलिए नाम ही बदल लिया है। भारतवासी ही अपना देवी देवता धर्म भूल गये हैं। भारत जितना पवित्र खण्ड शुरू में और कोई हो नहीं सकता। नई दुनिया में नया भारत था। यह बातें अभी तुम सुनते हो। आगे कब सुनी न है। न कोई शास्त्रों में ही है। कहां2 अक्षर है जरूर परमात्मा ब्राह्मण देवता क्षत्री धर्म की स्थापना करते हैं। परन्तु कब कैसे वह फिर कहां लिखा हुआ नहीं है। अभी बाप द्वारा तुम सभी कुछ जान रहे हो। बाप कितना ऊंच है। और कितना ऊंच पढ़ाते हैं। वह सभी हैं हद की हिस्ट्री जागरफी। यह बाप फिर बेहद की सुनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम सारे विश्व के रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। (मनुष्य जो रचयिता और रचना को नहीं जानते तो उनको इडियट कहा जाता है। सतयुग में इनका(ल०ना०) राज्य था। जरूर इन्हों को कोई ने ऐसा बनाया होगा) इस समय तुम इतनी ऊंच पढ़ाई पढ़ते हो इसलिए तुमको पद्मभाग्यशाली कहा जाता है। क्योंकि तुम आने से ही धनवान बनते हो। और धर्म स्थापक जो हैं वह कोई आने से ही धनवान नहीं बनते हैं। सारा मदार कमाई पर है। कमाई के साथ फिर हेल्थ भी चाहिए ना। बड़ी आयु भी चाहिए। और कोई भी नेशन की इतनी बड़ी आयु होती ही नहीं। कर के कोई मुश्किल 100-125 वर्ष के आयु के निकल आवेंगे। एवरेज आयु देवताओं की ही बड़ी होती है। बाकी तो सभी पीछे ही आते हैं। इसलिए तुम ही अमरपुरी के मालिक बनते हो। तुमको यहां कब काल नहीं खावेगा। अकाले मृत्यु नहीं होती। ऐसा और कोई धर्म वाला नहीं है जिसको काल नहीं खाता हो। भारत का ही गायन है। कहते भी हैं क्राईस्ट से 3000 वर्ष पहले हेविन था। बहुत पवित्र थे। आयुष्मान भी थे। एवर हेल्दी-वेल्दी भी थे। एवर हेल्दी-वेल्दी, हैपी बनने की तुम्हारी एमआबजेक्ट है। कौन बनाते हैं? (बेहद का बाप। अभी बाप आयाहुआ है। नई दुनिया रचते हैं। इसके लिए तुम लायक बन रहे हो। तुम ही नम्बरवन में लायक बनते हो। फिर नम्बर लास्ट में नालायक बनते हो) स्वर्ग क्या चीज होती है किसको भी पता नहीं है। देवताओं की पूजा भी करते हैं परन्तु उनके जीवन कहानी को किसको भी पता नहीं है। देवताओं के आगे माथा टेकते रहते। तीर्थ यात्रा आद करते जाते हैं टिपरी घिसाते, पैसे खर्च करते रहते हैं। इस समय कर के भल कोई धनवान हैं परन्तु आयुष्मान नहीं। हेल्दी नहीं। मनुष्य देवताओं की तो महिमा गाते हैं ना। जरूर इस विश्व की ही इन्हों का राज्य था। वह फिर इतना कहते हैं कि स्वर्ग था। कैसे था फिर कब होगा यह ज्ञान नहीं है। इसको ही कहा जाता है घोर-अंधियारा। नो नालेज। (तुमको अभी नालेज मिल रही है। बाप द्वारा। बाप कहते हैं मैं एक ही बार आता हूं। फिर कब आता नहीं हूं। और बहुत सहज रास्ता बताता हूं) भक्तिमार्ग में तुम ने बहुत दुःख देखे हैं। तब तो कहते हो ना दुःख हरो सुख दो। यहां तो है ही दुःखधाम। भटकना ही भटकना है। इसको कहा जाता है मायावी चमत्कार। खण्ड के पानी निशान बहुत शो हैं। वास्तव में इसमें कुछ रखा नहीं है। कितने बड़े2 मंदिर बनाते हैं। चित्र बनाते हैं। कितना खर्चा और शो करते हैं। जैसे झाड़ का शो है ना। बीज तो कितना छोटा है। झाड़ कितना लम्बा-चौड़ा है। एक बीज से झाड़

कितना बड़ा निकलता है। तो भक्ति का भी यह शो है। मेले मलाखरे कितने धूम-धाम से किसके आगे है। कितने त्योहार आद बनाते हैं। यह त्योहार आद भी सभी इस समय के हैं। जो बाद में चलता है। सतयुग में यह दशहरा दीवाली आद होती ही नहीं। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। अभी तुम बच्चों को सारी नालेज धारण कर बीज बनना है। जैसे बाप बीज है वैसे तुम भी ज्ञान का सागर, सुख का सागर बीज रूप बनते हो। सारी झाड़ की नालेज तुमको मिलती है। जैसे बाप बीज है, सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। तुम भी बच्चे होने के कारण सारी नालेज प्राप्त करते हो। भक्ति मार्ग में क्या2 होता है। यह भी खेल है ना। आत्मा ही शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। यह कोई की भी बुद्धि में नहीं बैठता। आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। इसको ही कुदरत कहा जाता है। इतनी छोटी बिन्दी में कैसे 84 का पार्ट भरा हुआ है। यह कब कोई सुना न सके सिवाय बाप के। तुम्हारी आत्मा रिकार्ड है। सारे वर्ल्ड का चक्र एक एक जन्म में जो पार्ट बजाती हैं, 84 जन्मों की एक्ट का पार्ट इतनी छोटी सी बिन्दी में है। बाप कहते हैं मैं तुमको बहुत गुह्य2 बातें सुनाता हूं। बहुत डीपनेस में ले जाता हूं। सिवाय कुदरत के और कोई कुछ भी नहीं कह सकते। बाप बैठ समझाते हैं तो भी कोई2 की बुद्धि में नहीं बैठता है। भक्ति मार्ग में शिव की पूजा शुरू से ही करते हैं। और हमेशा बड़ा लिंग ही बनाते हैं। बाप समझाते हैं आत्मा कोई बड़ी या छोटी होती नहीं। सभी आत्मायें एक्टर्स हैं। शरीर रूपी कपड़ा पहन कर क्या2 एक्ट करती हैं। हर एक में पार्ट भरा हुआ है। यह तो कोई भी समझाये न सके। बाप अन्त में ही आकर समझाते हैं। जब कि सारी दुनिया यहां हाजिर है। पिछाड़ी तक जो इस धर्म के होंगे वह सुनेंगे। भक्ति में भी पिछाड़ी को आने वाले समझ नहीं सकते हैं। बाप कहते हैं तुमको गुह्य2 बातें सुनाता हूं। जरूर और गुह्य बातें होंगी। जो सुनावेंगे। कितना सुनाता हूं। इसमें भी मूल बात है याद की। याद की यात्रा से ही सतोप्रधान बनना है। इसमें ही मेहनत है। टाईम लगता है। नालेज तो बहुत सहज है। तुम स्वदर्शनचक्रधारी तो हो। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, उनकी डेवयुेशन कितनी है यह कोई भी मनुष्य मात्र कोई भी धर्म वाला नहीं जानते हैं। तो ईडियट ठहरे ना। मनुष्य को ही जानना होता है। इसको जानने से ही तुम देवीदेवता बन जाते हो। और कोई धर्म वाला देवता होन न सके इसके हरेक अपना धर्म स्थापन करते है। बाप तुम बच्चों को कहते हैं तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने वाला है। क्योंकि मैं आकर तुमको पढ़ता हूं। यह है 21 जन्मों के लिए सच्ची कमाई। सतयुग त्रेता को कहा जाता है। त्रेता में दो कला कम हो जाती है। परन्तु यह भी और कोई को पता नहीं है। दो कला कम क्या है। यह भी तुमको बाप समझाते हैं। गोल्डेन एज सतयुग को ही कहेंगे। फिर त्रेता सिलवर एज कैसे होती है। जो अच्छी रीत न पढ़ते हैं तो पीछे आ जाते हैं। क्योंकि माया से हार खा लेते हैं। तुम हो रूहानी क्षत्री। वह है जिसमानी क्षत्री। बन्दूक आद चलाने वाला। तुम भी युद्ध के मैदान में हो। 5 विकारों को जीतते हो। तुम्हारी राजाई पर जीत होती है। गांधी भी कहते थे हम रामराज्य स्थापन करते हैं। हाथ में थी गीता। और कहते थे पतित-पावन सीताराम। अर्थात सभी सीतायें भक्तियां हैं। एक है भगवान। एक तो ठीक है सीताओं भक्तियों को सदगति देने वाला एक राम है। फिर कहते थे रघुपति राघव राजाराम। वह तो फिर चन्द्रवंशी हो गया। गीता में तो राम की महिमा है नहीं उसने तो माया से हार खाई है। तुम अभी माया पर जीत पहनते हो। इसलिए राम को धनुष-बाण आद दिया है। भक्ति-मार्ग में कहां की बातें कहां आ गये हैं। ऐसी2 बातें सुन कर तुम्हारे में भी कट चढ़ गई है। कहते हैं नाशेर का दूध सोने के बर्तन में ठहर सकता है। यह ज्ञान भी ऐसा है इनके लिए सोने की बुद्धि चाहिए। जो धारणा भी हो सके। बहुत भारी चीज है। तुम्हारी धारणा बहुत होगी। जब बाप को याद करते रहेंगे। बाप को याद कर सुनते हो तो धारणा होती है। फिर बाप को भूल कर देह अभिमान में आ जाते हैं तो फिर धारणा नहीं होती। पतित बन पड़ते हो। पतित और पावन तुम घड़ी2 बनते हो। बाप को याद करते हो तो पावन बनते हो। भूलते हो तो पतित बन जाते हो। बाप को याद करते हो तो तुम्हारे पाप कटते हैं। भूलते हो तो

पाप बढ़ते हैं। इसलिए बाप कहते हैं सदैव देहीअभिमानी रहो। यह भी फ्ट से नहीं हो सकता। स्कूल में बैठने से ही तोपास नहीं हो जावेंगे। जो जीयेंगे तो पढ़ेंगे। पढ़ कर फिर ट्रान्सफर होते हैं। तुमको ट्रान्सफर होना है अमरपुरीनई दुनिया में। ऐसी पढ़ाई के लिए पुरुषोत्तम संगम युग है। जब कि तुम पढ़ कर पुरुषोत्तम बन नई दुनिया में चले जाते हो। बाप ही ले जा सकते हैं। तुमको बहुत खुशी होती है। क्योंकि तुम जानते हो हम ही पहले देवी देवताएं थे। फिर 84 की सीढ़ी उतरे। 84 लाख की बात तो कब बुधि में आ न सके। कहाँ 84 कहां 84 लाख। थोड़ाकुछ सच्च बताते बाकी तो सभी हैं झूठ। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा इस पृथ्वी पर जिनको अपने जन्मों का ज्ञान हो। तुम बच्चों को ज्ञान है। बाप ने बतलाया है तुम कैसे 84 जन्म लेते हो। और तो कोई बता न सके। अभी बाप कहते हैं बच्चों सिर्फ इस जन्म में काम विकार पर जीत पानी है। पढ़ाई से सेकण्ड में जीवनमुक्ति। ऐसा कब सुना? बी०ए० पढ़ेंगे तो बी०ए० के स्टुडन्ट बन गये। पीछे फिर है पास करने वाले पड़े। जितना टीचर द्वारा पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊंच मर्तबा मिलेगा। वह है हद की बातें। यह है बेहद की बातें। इनको किसको भी पता नहीं है। नये के बुधि में बैठेंगा ही नहीं। ऐसे बहुत हैं जो आगे चल कर पढ़ने वाले हैं। जायन्ट होती जाती है। प्रजापिता ब्रह्मा एक को ही बाप ने एडाप्ट किया फिर एक दो से, दो से ... झाड़ ऐसे बढ़ता है ना। पहले एक पता फिर युगल होता है। फिर पत्ते निकलते जाते हैं। झाड़ कितना बड़ा झाड़ की भी नालेज चाहिए ना। जनावरों को तो नालेज नहीं मिलती। अभी मनुष्यों को तो यह नालेज कौन देवे। देवे। बाप ही देने वाला है। देवताओं को भी नालेजफुल नहीं कहेंगे। वह नालेज धारण कर यह (ल०ना०) बनते हैं। परन्तु इन्हीं को फिर यह सभी भूल जाता है। वन्डरफुल बात है ना। बुधि से जज करना है वाला ठीक कहते हैं। इन (ल०ना०) में यह नालेज है नहीं। नालेज मिली और ज्ञानी बन गये। भक्ति मार्ग का फल मिल गया। भक्ति का फल है ज्ञान। फिर जब ज्ञानपूरा होता है तब ही भक्ति शुरू होती है। यह नालेज और कोई पास है नहीं। बाप ही सृष्टि के आदि मध्य अन्त का फुल ज्ञान देते हैं। और कोई में यह नालेज है नहीं। गीता भीभक्ति के लिए एक शास्त्र बना दिया है। अग्रम-बग्रम लिख दिया है। व्यास को फिर भगवान कह देते हैं। व्यास को तो कहा जाता है कथा सुनाने वाला। सब से बड़ा यह है ना ज्ञान सुनाने वाला। बाबा ने कोई शास्त्र नहीं लिखी। बाप तो तुमको पढ़ा रहे हैं। बड़े2 मनुष्य जो अच्छे एक्ट कर के जाते हैं उनकी कितनी वाल्युम बनते हैं। नेहरु की जीवन कहानी कितनी वाल्युमस है। अभी वह जीवनकहानी तो कोई काम का नहीं। वह तो विकारी है। बड़े आदमियों की महिमा तो करते ही हैं। जैसे बाबा मिशाल भी देते हैं ना तुलसी दास गरीब की कोई न पूछे न बात। बड़े आदमियों का नाम होता है। अभी तुम जानते हो सब से बड़ा ते बड़ा है बाबा। वही श्रीमत देते हैं। उनको कोई का भी पता नहीं है। बड़े ते बड़ा शास्त्र है शिरोमणी गीता। श्रीमत तो बाप की ही गाई जाती है। कृष्ण भी तेरे मनुष्य है ना। दैवी गुण वाला है। उनको भगवान नहीं कहा जा सकता है। देवीगुण है इसलिए उनको देवता कहा जाता है। आसुरी गुण है तो असुर कहा जाता। बाप कहते हैं यह है आसुरी सम्प्रदाय। अर्थात इन में आसुरी गुण है। देवताएं जब वाममार्ग में चले जाते हैं तो फिर आसुरी गुण आ जाते हैं। मुख्य है ही काम। पूरी में चित्रदिखाते हैं ऐसे देवताओं की और फिर चित्र बहुत गंदे लगे हुये हैं। नीचे पवित्र। और ऊपर फिर दिखाते हैं देवताएं कैसे वाम मार्ग में गिरे। कब गिरे यह नहीं जानते। देवताओं के चित्र बहुत विपरीत दिखाते हैं। यह भी बाप समझाते हैं वाम मार्ग में कैसे गिरे फिर वेद मंदिर बनाई। निशानियां तो रह जाती है ना। अभी बाप समझाते हैं भूल बात है (बाप से वर्षा लेना तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। मानव मत न चलो। यहां तो बहुत संस्थाएं है जो है मानव मत की। दिन प्रति दिन मनुष्य उतरते ही जाते हैं। ऊपर चढ़ ही नहीं सकते हैं। सभी की उतरती कला है। चढ़ती कला है नई दुनिया। उतरती कला पुरानी दुनिया। सभी की कला उतरती ही जाती है। चढ़ती किसकी भी नहीं। क्योंकि मनुष्य मत है।

श्रीमत मिलती ही है एक बार। बाप कहते हैं मेरा भी अलौकिक जन्म है। आने से ही तुमको नालेज देता हूं। कृष्ण ने तो माँ के गर्भ से जन्म लिया। कितना फर्क हो गया। भारत की भी शास्त्र झूठी हो गई। पाण्डवों और कौरवों आद की लड़ाई है नहीं। तुम हो पाण्डव। तुम सभी पण्डे हो। पाण्डव वा गाईड। पण्डों को गाईड कहा जाता है। तुम हो सभी को बाप के घर ले जाने वाले। सभी को दुःखधाम से शान्तिधाम में जाना है। फिर चक्र लगाना है। घर जाकर फिर चक्र लगाना है। फिर तुम बच्चों को अपनी राजधानी में आना है। सभी अपने2 धर्म में आवेंगे। आत्माओं का पार्ट विनाश नहीं होता। न आत्मा विनाश होती है न पार्ट विनाश होता। परम्परा से पार्ट चला ही आता है। अन्त नहीं होता। ड्रामा किसने बनाया होगा यह सवाल ही नहीं उठता। परम्परा से चला आता है। ना एण्ड। जो भी इस चक्र में पार्ट धारी हैं उनका भी पार्ट अविनाशी है। बहुत सवाल करते हैं भगवान ने यह क्यों किया। दुःख क्यों दिया। एक चक्र आया फिर बन्द हो जाना चाहिए। ऐसा क्यों? क्यों का प्रश्न नहीं उठता। खेल में हम चक्र लगाते ही रहते हैं। देवताओं की है डिनायस्टी। राजाई चलती है। और कोई भी धर्म वाला राजाई नहीं स्थापन करते हैं। बाप आकर राजाई स्थापन करते हैं। बाप की श्रीमत पर तुम अपनी राजधानी स्थापन करते हो। बाप को ही भूल गये हो। त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह देते हैं। त्रिमूर्ति नाम से रास्ता भी है। घर भी है (कोई पूछे त्रिमूर्ति क्या चीज़ है। कुछ भी नहीं जानते। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर दिखाते हैं तो भी बुद्धि में नहीं बैठता। त्रिमूर्ति तो मशहुर है ना। शिव को अलग त्रिमूर्ति को अलग कर दिया है। शंकर को फिर शिव से मिला दिया है। अभी शंकर तो सूक्ष्मवतन वासी है। शिव काका बाप का तो बहुत भारी पार्ट है। शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। जो एक्ट करते हैं वह भी सज़ा की निमित्त करने वाले भी सज़ा के निमित्त हो जाते हैं। अभी बाप ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि मारो। यह रांग चित्र है। विष्णु को भी सूक्ष्मवतनवासी दिखाते हैं। वहां तो ऐसे हीरे जवाहर आद होते ही नहीं। बाप बैठसमझाते हैं यह लक्ष्मी नारायण तो हैं सतयुग के। वहां सूक्ष्मवतन में चित्र रख दिया है। बाकी वहां इतने हीरे मोती वा बेल आद कहां से आया। वह तो चित्र रांग है। सर्प आद दिखाते हैं। सभी हैं रांग। शंकर के साथ चौपड़ी खेल भी दिखाते हैं। अभी फिर सूक्ष्मवतन में चौपड़ी आद कहां से आई। यह सभी नानसेन्स हैं ना। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग में माया मनुष्यों की बुद्धि कितनी बेअकल बना दी है। कोई में भी नालेज है नहीं। बाप आकर तुमको नालेज देते हैं। बाप आकर तुमको नालेज देते हैं। बाप को नालेजफुल क्यों कहा जाता है यह भी तुम जानते हो। परमात्माजानी जाननहार है उसका अर्थ भी उल्टा कर दिया है। कब कहते हैं वह सभी के दिलों को जानते हैं। कब कहते हैं वह सभी के दिलों में हैं। वह घाट घाट रीडर तो अलग होते हैं। बाप तो घाट रीडर नहीं है। बाप कहते हैं जो जैसा कर्म करते हैं वैसे ही सज़ा पाते हैं। उनका कनेक्शन है धर्मराज से। मैं थोड़े ही जानता हूं। मैं तो सिर्फ पतित से पावन बनाने का रास्ता बताता हूं। जो चलेगा वह पावेगा। ऐसे नहीं परमात्मा सभी के दिलों को जानते हैं। कोई उल्टा काम करते हैं और ही डन्ड पाते हैं। अगर मेरे से छिपाते हैं तो। मैं आया हूं रास्ता बताने या तुम्हारे अन्दर को जानने। मैं शान्तिधाम सुखधाम का रास्ता बताता हूं। मैं तुम ब्राह्मणों को ही आकर पढ़ाता हूं। तुम ब्राह्मण ही नालेजफुल बनते हो। न खुद नालेजफुल हो सकते हैं न देवतायें। तुम ब्राह्मण हो एडाप्टेड। इनको कुल कहा जाता है। डिनायस्टी नहीं कहेंगे।

यह नालेज तुम स्टुडन्ट को धारण करनी है। धारण करने से ही तुम ऊंच पद पाते हो। इसको कहा जाता है स्प्रीच्युल नालेज। वह तो स्प्रीच्युअल फादर ही देंगे ना। वह तो बहुत गपोड़ मारते हैं। ऐसे भी झूठ बोलते हैं। इसलिए बाप कहते हैं इन साधुओं का भी मैं उधार करने आता हूं।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते किसने को? ओमशान्ति।